# नगर प्रभाव क्षेत्र सीमांकन एवं विशेषताएं
# (URBAN INFLUENCE AREA,LIMITATIONS AND FEATURES)

नगर का प्रभाव क्षेत्र वह क्षेत्र होता है, जो उसके चारों ओर सतत रूप से फैला होता है और यह क्षेत्र नगर से समाजिक आर्थिक रूप से सम्बद्ध होता है, साथ ही नगर भी इस क्षेत्र पर निर्भर होता है। नार्दन ने सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग किया था।

जैफरसन के अनुसार नगर स्वयं अपने में विकसित नहीं होते, बल्कि आसपास का ग्रामीण क्षेत्र इसे केन्द्रीय कार्य करने के लिए प्रेरित करता है और नगर प्रभाव क्षेत्र का विकास होता है। इस तरह नगर एवं चारों और फैले ग्रामीण क्षेत्र के बीच अन्तरसबंध होता है,और इस अर्न्तसंबंध वाले प्रदेश की एक सीमा होती है। यह सीमा सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक अवस्थाओं से संबंधित एवं प्रभावित होने के कारण बढ़ती घटती रहती हे। अर्थात् नगरीय प्रभाव क्षेत्र की स्थिति सदैव एक नहीं रहती। अतः इसके सीमांकन को लेकर कई कार्य किए हैं। भूगोल में नगर प्रभाव क्षेत्र का अध्ययन का प्रारंभ (1914) से माना जा सकता है जब आन्द्रे एलिच (Andre Allix) ने नगर के चारों और स्थित क्षेत्र के लिए (परिनगर) Umland शब्द का प्रयोग किया था। अमलैण्ड वह क्षेत्र है जो नगर के चारो ओर स्थित हैं तथा नगर के साथ समाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से संबंधित होता है। भारत में इस शब्द का प्रयोग बनारस नगर के चारों ओर स्थित क्षेत्रों लिए **राम लोचन सिंह** ने किया था।

अमलैण्ड के अतिरिक्त अन्य शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। **हैरिस एवं डिकिन्सन ने नगर प्रदेश** (Citi Region) शब्द का प्रयोग किया है। नगर प्रदेश शब्द को वर्तमान में अधिक मान्यता है। मात्रात्मक क्रांति के बाद शोर्ले एवं हैगेट ने भी नगर प्रदेश शब्द को अधिक उपयुक्त बताया है। नगर प्रदेश नगरीय प्रभाव क्षेत्र के साथ ही नगर की विशेषताओं को भी बतलाता है। अर्थात नगर प्रदेश मे नगर एवं प्रभाव क्षेत्र दोनो ही सम्मिलित रहते है। भारत में ए0बी0 चटर्जी एवं एन0 वी0 के0 रेडड्ी ने नगर प्रदेश को अधिक व्यावहारिक बताया है। प्रो0 रेडड्ी के अनुसार प्रत्येक नगर का एक वृहद प्रभाव क्षेत्र होता है और इसके अन्तर्गत नगर भी सम्मिलित होता है। यह प्रभाव क्षेत्र ही नगर प्रदेश है।

## नगर प्रभाव क्षेत्र अमलैण्ड एवं नगर प्रदेश Sphere of Influence, Umland & City Region

**नगर प्रभाव क्षेत्र** शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम अमेरिकी भूगोलवेत्ता **नोर्दन** द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद किया गया था। नगर प्रभाव क्षेत्र का तात्पर्य नगरीय प्रशासन के वाध्य अवस्थित उस भौगोलिक क्षेत्र से है, जिस पर नगर का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रभाव होता है। वस्तुतः वैसे प्रदेश पर न सिर्फ नगर का प्रभाव होता है, वरन यह प्रदेश की नगर को प्रभावित करता है। ***जैफरसन के अनुसार नगर अपने आप नहीं बनते बल्कि आस पास का ग्रामीण क्षेत्र उसे केन्द्रीय कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं और यही प्ररेणा नगर प्रभाव क्षेत्र को विकसित करता है।***

लेकिन भूगोल में नगर प्रभाव क्षेत्र का अध्ययन एवं प्रयोग एक नवीन घटना है। इसके पूर्व भी नगर के आस पास के क्षेत्र का नगर के संदर्भ में अध्ययन होता था और उसे Umland कहा गया था। अमलैण्ड का तात्पर्य भी नगर प्रभाव क्षेत्र ही होता है। ***अमलैण्ड शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम आंद्रे एलिच महोदय (1914 ई0 में ) ने किया।*** अमलैण्ड वह क्षेत्र है, जो नगर के चारों ओर स्थित होता है तथा नगर के साथ अन्तर्गमन–वहिर्गमन (Inflow - Outflow Relation) रखता है।

वस्तुतः नगरीय प्रभाव क्षेत्र एवं अमलैण्ड की तुलना में नगरीय भूगोल में नगर प्रदेश शब्द (City Region) को अधिक मान्यता है। नगर प्रदेश शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम डिकिन्सन महोदय ने अपनी पुस्तक City, Region and Regionalization में किया है। मात्रात्मक क्रांति के बाद शोर्ले (Chorley) एवं हैगेट (Hagget) जैसे भूगोलवेत्ताओं ने इस शब्द को अधिक उपयुक्त बताया है।

अमलैण्ड तथा नगर प्रभाव क्षेत्र की व्याख्या के क्रम में नगर की आंतरिक विशेषताओं का उल्लेख नहीं होता है। जबकि नगरीय कार्यो से नगर में रहने वाले लोग भी लाभान्वित होते है। अतः नगर प्रदेश की संकल्पना के अन्तर्गत न केवल नगर के प्रभाव क्षेत्र को रखा गया है, वरन नगर को भी सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार का अध्ययन नगर तथा प्रादेशिक नियोजन में भी लाभकारी सिद्व हो सकता है। इसलिए अधिकतर विकासशील देशों में नगर प्रदेश शब्द को ही अधिक मान्यता है। ***भारतीय भूगोलवेत्ता में A.B. Chatarjee तथा N.B.K. Reddy ने नगर प्रदेश शब्द को अधिक व्यावहारिक बताया हैं।*** प्रो0 रेड्डी के अनुसार प्रत्येक नगर का एक वृहद प्रभाव क्षेत्र होता है, जिसके अन्तर्गत नगर भी सम्मिलित होता है। यही प्रभाव क्षेत्र नगर प्रदेश क्षेत्र है।

## सीमांकन विधि

अमलैण्ड, नगर प्रभाव क्षेत्र एवं नगर प्रदेश का प्रयोग समय के संदर्भ में किया गया हैं। नगरीय भूगोल के प्रारंभिक चरण में

अमलैण्ड शब्द का प्रयोग किया गया था तथा उसका सीमांकन अनुभवाश्रित विधि (Imperical Method) पर अधारित था। अर्थात कुछ कार्यो को आधार मान कर सीमांकन का कार्य किया जाता था। कुछ कार्यो के अन्तर्गत दोनों ही नगरीय एवं ग्रामीण कार्य आते थे।

(I) **हेरिस महोदय** ने USA के Shalt lake city के अमलैण्ड का अध्ययन 12 कार्यो के सहायता से की। उसके अन्तर्गत खुदरा व्यापार, थोक व्यापार, चिकित्सा कार्य, रेडियो ब्राड कास्टिंग प्रभाव, समाचार पत्र वितरण, बससेवा तथा टेलीफोन सेवा को महत्वपूर्ण चर की मान्यता दी गई थी। हैरिस के कार्यो को व्यापक मान्यता प्राप्त है। हैरिस महोदय ने यह भी बतलाया कि अलग–अलग नगरों के लिए अलग–अलग सेवाओं का प्रयोग किया जा सकता हैं

(II) **भारतीय नगरों के अमलैण्ड** के निर्धारण का सर्वप्रथम कार्य 1955 में **डा0 आर. एल. सिंह** ने किया था। उन्होने **बनारस नगर** के अमलैण्ड के निर्धारण में 5 प्रमुख कार्यो को आधार माना। ये कार्य है–

1. सब्जी आपूर्ति
2. दुग्ध आपूर्ति
3. खाद्यान आपूर्ति
4. बस सेवा
5. समाचार पत्र आपूर्ति

(III) इसी प्रकार **डा. उजागार सिंह** ने 1969 में **इलाहाबाद नगर** के अमलैण्ड के निर्धारण में 7 चरों का उपयोग किया जो निम्न है–

1. सब्जी आपूर्ति
2. दुग्ध आपूर्ति
3. कॉलेज सेवा
4. खाद्यान आपूर्ति
5. खुदरा व्यापार
6. थोक व्यापार
7. प्रशासनिक सेवा

उपर के कार्यो को देखने से स्पष्ट है, कि अमलैण्ड निर्धारण में सर्वमान्य अवधारणा नहीं हो सकती हैं, क्योंकि विभिन्न विद्वानों द्वारा विभिन्न नगरों के लिए अलग–अलग कार्यिक चरों का विश्लेषण किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में एक ही नगर के लिए अनेक अमलैण्ड निर्धारित हो सकते है। अतः द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जब भूगोल में मात्रात्मक क्रांति के प्रभाव का आगमन हुआ तो नगरीय भूगोल में भी उसका निश्चित प्रभाव पड़ा।

**मात्रात्मक क्रांति के अन्तर्गत कार्यो के बदले नगर की जनसंख्या आकार को नगर का प्रभाव क्षेत्र निर्धारण का आधार माना गया है।** नार्दन के अनुसार किसी भी नगर में जितनी अधिक जनसंख्या होती है; उसका प्रभाव क्षेत्र उतना ही बड़ा होता है। अतः कार्यिक विविधता के बदले नगर की जनसंख्या के प्रभाव क्षेत्र को अधिक महत्व दिया गया है। चूंकि नगर के आकार को आधार माना गया है। अतः नगर प्रभाव क्षेत्र को क्रमशः अधिक मान्यता मिली। नगर प्रभाव क्षेत्र नगर के आकार पर निर्भर करता है।

(IV) **रैली महोदय** द्वारा नगर प्रभाव क्षेत्र के सीमांकन के लिए **गुरूत्वाकर्षण का मॉडल** विकसित किया गया है, जो इस प्रकार है–

$$P = \frac{MA \times MB}{D^2}$$

P= MA से संभावित प्रभाव क्षेत्र की सीमा की दूरी (MA नगर का प्रभाव क्षेत्र की दूरी)

d = दो निकटतम नगरों के बीच की दूरी

MA = सबसे बड़े नगर का जनसंख्या आकार

MB = छोटे नगर की जनसंख्या आकार

वस्तुतः जनसंख्या आकार को आधार मानने से उस क्षेत्र का निर्धारण होता है, जो नगर से सतत सम्पर्क में रखता है। पुनः कार्यिक चरो से उत्पन्न भ्रांतियों को भी दूर करते है। जैसे बनारस के धर्म एवं न्यूयार्क का न्यूयार्क टाइम्स तथा UNO का कार्य विश्व पर प्रभाव डालता है, लेकिन पूरा विश्व उसका अमलैण्ड (Umland) नहीं होगा। इसलिए मात्रात्मक क्रांति के आते ही मात्रात्मक विधि पर प्रभाव क्षेत्र

को निर्धारित करने का प्रयास किया गया है।

इस संदर्भ में कई भारतीय भूगोलवेत्ताओ ने भी कार्य किया है, जिनमें **प्रकाश राव** का कार्य महत्वपूर्ण है। उन्होने कर्नाटक राज्य के सभी आकार के नगरों के प्रभाव क्षेत्र को सीमांकित करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया।

$$R = \frac{\sqrt{T \times A}}{U}$$

R = नगर के प्रभाव क्षेत्र की सीमा

T = नगर का कुल जनसंख्या

A = प्रदेश का क्षेत्रफल

U = प्रदेश का कुल जनसंख्या

प्रकाशराव ने नगर के प्रभाव क्षेत्र के सीमांकन में प्रादेशिक परिस्थितियों को भी ध्यान में रखते हुए सीमांकन का कार्य किया है।